class 11th
sub hindi
date 17/4/20
learn and write in fair notebook

4 *निम्न पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए*

नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर की मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है, जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ।

(क) यह किसकी उक्ति है?
(ख) मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद क्यों कहा गया है?
(ग) क्या आप एक पिता के इस वक्तव्य से सहमत हैं?

उत्तर (क) यह उक्ति वंशीधर के बूढ़े पिता की है।

(ख) मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद इसलिए कहा गया है, क्योंकि जिस प्रकार पूर्णमासी का चाँद पूर्णिमा के दिन ही पूरा दिखाई देने के उपरांत दूसरे दिन से ही घटना प्रारंभ हो जाता है, ठीक उसी प्रकार वेतन भी मास में मिलता तो एक बार है, किंतु अगले दिन से ही घटते-घटते शीघ्र ही समाप्त हो जाता है।

(ग) नहीं, मैं पिता के इस वक्तव्य से बिलकुल भी सहमत नहीं हूँ, क्योंकि जब एक पिता ही इस तरह की सोच का वक्तव्य देगा, तो पुत्र की मानसिकता के विकृत होने की संभावना अधिक हो जाती है। ऐसी मानसिकता समाज के लिए भी अहितकारी है।

5 'नमक का दारोगा' कहानी के कोई दो अन्य शीर्षक बताते हुए उसके आधार को भी स्पष्ट कीजिए।

उत्तर *'नमक का दारोगा' कहानी के दो अन्य निम्नलिखित शीर्षक हो सकते हैं*

(*i*) **सत्य की जीत** यह शीर्षक कहानी का केंद्रीय भाव है, मूल उद्देश्य है। वंशीधर को सत्य के रास्ते पर चलने में कठोर संघर्ष का सामना करना पड़ता है। यहाँ तक कि उन्हें नौकरी से भी निकाल दिया जाता है, परंतु वे विचलित नहीं होते हैं। कहानी के अंत में भ्रष्ट अलोपीदीन उनके यहाँ आता है और अपने किए पर

पश्चात्ताप प्रकट करते हुए वंशीधर को अपनी संपत्ति का प्रबंधक नियुक्त करता है। अतः 'सत्य की जीत' शीर्षक कहानी के लिए उपयुक्त शीर्षक हो सकता है।

(ii) **नैतिकता का मूल्य** यह कहानी नैतिक मूल्यों पर आधारित है। ईमानदारी के महत्त्व को कहानी में रेखांकित किया गया है। यह कहानी जीवन मूल्यों के प्रति आस्था को बनाए रखने में सक्षम है। अतः कहानी का दूसरा उपयुक्त शीर्षक 'नैतिकता का मूल्य' हो सकता है।

6 कहानी के अंत में अलोपीदीन के द्वारा वंशीधर को नियुक्त करने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए। आप इस कहानी का अंत कैसे करते?

उत्तर कहानी के अंत में अलोपीदीन द्वारा वंशीधर को नियुक्त करने के पीछे यह कारण हो सकता है कि उसने अब तक बेइमान, भ्रष्ट और बिकाऊ लोग ही देखे थे, चूँकि वह स्वयं लालची, धनलोलुप व्यक्ति था, जिसने बड़े-से-बड़े अधिकारियों को भी रिश्वत के बल पर अपना गुलाम बना लिया था।

केवल एक वंशीधर ही उसे ऐसा व्यक्ति मिला, जो हज़ारों रुपयों का लालच देने पर भी अपने ईमान से नहीं डिगा, अटल रहा।

अलोपीदीन अतुल संपत्ति का मालिक था। उसकी संपत्ति की सुरक्षा जिनके हाथों में थी, वे भी बेइमान ही थे।

अतः उसे अपनी संपत्ति की सुरक्षा हेतु ऐसे ही दृढ़ चरित्र वाले एक प्रबंधक की आवश्यकता थी, क्योंकि व्यक्ति स्वयं कितना ही बेइमान, भ्रष्ट हो पर उसे कर्मचारी ईमानदार व सच्चा ही चाहिए, इसलिए उसने उसे नियुक्त किया। मैं भी इस कहानी का अंत इसी प्रकार अच्छाई की जीत दिखाकर ही करता।